मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

महिला सुरक्षा व सम्मान का ढोल बजाने ..... कैसीनो का बढ़ता कारोबार — 3

फ़रेबी नंबर वन ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी से सावधान — 4

मज़दूरों का चुनावी घोषणापत्र
चीनी मिलों पर बकाया किसानों की दुदर्शा — 6

निर्दोषों को 5–5 लाख मुआवजा
भयभीत भड़ाना व कृष्णपाल ने काले झंडे दिखवाए — 8

वर्ष 27 अंक 10 फरीदाबाद, मंगलवार, 1-15 अप्रैल 2014 फोन : - 9999595632 ₹ 2

लूट, झूठ और पैराशूट

तीस हज़ार करोड़ से चमकेगी यह तस्वीर

चुनावी राजनीति का चरित्र सत्ता के चरित्र से अलग नहीं हो सकता। फूटने और रूठने की कवायद में महज़ कुर्सी की चाह छिपी है। पैराशूट से कूदने की कला दिखाने वालों को टिकट-बाज़ार में सभी पार्टियां तरहीज दे रही हैं।

दिल्ली मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

सन् 2014 के लोकसभा चुनाव का खेल दो स्तरों पर खेला जा रहा है। सत्ता हथियाने की दौड़ में लगे खिलाड़ियों के लिये यह खेल कार्पोरेट पैसे के दम पर चल रहा है। जबकि मतदाताओं के लिये यह चेहरों में बदलाव का एक अवसर है। दोनों स्तरों पर तरह-तरह से रणनीतिक कौशल भी देखे जा सकते हैं।

यह खेल जितना ढका हुआ है उतना ही नंगा भी। तभी, कुर्सी की मारा-मारी में पार्टियां एक दूसरे से तो लड़ ही रही हैं, उनके भीतर भी घमासान मचा हुआ है। भाजपा में 'मोदी बनाम आडवाणी' अगर भीतरघात का ज्वलंत उदाहरण है तो रामबिलास पासवान का कांग्रेस से फूट कर भाजपा की गोद में बैठना परस्पर छुरेबाज़ी का नायाब नमूना हुआ। दरअसल, इस खेल में जो कहा जाता है उससे अधिक जो नहीं कहा जाता है, वही हकीकत है। मतदाता के स्तर पर भी स्पष्ट समझ देखी जा सकती है। बेशक उन्हें पता है कि नागनाथों और सांपनाथों में से चुनने को कुछ खास नहीं होता, पर वे इस सीमित विकल्प को भी अपने मतलब से इस्तेमाल करना चाहेंगे। निर्वाचित चेहरों के बदलने से बेशक मतदाता की तकदीर न भी बदले पर वह लुटेरे शासकों को अपनी उपस्थिति का एहसास तो करा ही देता है।

इन समीकरणों की अभिव्यक्ति बेहद दिलचस्प तौर पर हो रही है। इन्हें अपने बीच काम करते देखना मुश्किल नहीं है। एक दृष्य है पैराशूट से उतरते उम्मीदवारों का। जो अपनी पार्टी में किसी काम लायक नहीं समझे गये, पैराशूट से उतरते ही अन्य पार्टी के लिये काम के हो गये। रातों-रात कांग्रेसी जीव भाजपाई बन जाता है; 'आप' का घोषित उम्मीदवार टिकट लौटा देता है; भाजपाई नेता रोने-चीखने के बाद धकेले गये चुनाव क्षेत्र में जा उतरता है; इस बीच टिकट भी बेचे जाते हैं और उम्मीदवार भी खरीदे जाते हैं। चुनाव-व्यय

पर नज़र रखने वालों का मानना है कि कुल मिला कर विभिन्न पार्टियों द्वारा 30 हज़ार करोड़ इन चुनावों पर खर्च किये जायेंगे। चुनाव करने के तामझाम और सुरक्षा उपायों पर होनेवाला सरकारी खर्च भी हज़ारों करोड़ अलग से होगा। तुर्रा यह है कि पैसे के दम पर लड़े जा रहे चुनाव की निगरानी करने वाली संस्था, भारतीय चुनाव आयोग, का दावा है कि वह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के चुनाव की समुचित व्यवस्था 'सफ़लतापूर्वक' करने जा रही है। चुनाव आयोग के लम्बे-चौड़े निर्देश हैं जो चुनाव-प्रचार के एक-एक पहलू को बड़ी बरिकी से निर्धारित करते हैं। सवाल है कि फ़िर ये 30 हज़ार करोड़ रुपये किस मद में और कैसे खर्च होने जा रहे हैं? खर्च हो रही यह रकम उस ढकोसले को भी उजागर कर देती है जो कुछ नेताओं की हवा होने या वोट बैंक के दावों पर आधारित है।

शेष पेज 2 पर

मोदी साहब... सवाल क्यों नहीं लेते?

नरेन्द्र मोदी के आलोचकों को प्राय: कहते पाया कि वे सिर्फ़ बोलते हैं, सुनते नहीं उनके आस-पास कोई सवाल पूछने वाला मीडियाकर्मी फ़टक भी नहीं सकता। केवल फ़ोटो खींचने वाले ही करीब जा सकते हैं। यहां तक कि तेज़ तर्रार टी वी हीरो अर्णव गोस्वामी तक में भी इतनी हिम्मत नहीं कि अपने शो में मोदी के नाम की खाली कुर्सी डाल दे जैसा वह औरों के लिये करता है।

अव्वल तो यह कहना ग़लत है कि मोदी सुनते नहीं, टी वी के पर्दों पर हज़ारों की संख्या में उनके समर्थकों को उनकी जय-जयकार करते देखिये। उस समय कितने ध्यानमग्न होकर परम-शान्ति के साथ मोदी साहब का पुलकित रोम-रोम सुनने में तल्लीन होता है। अब अगर पूछने वालों को सवाल पूछने ही न आयें तो मोदी पर तो दोष नहीं लगाया जा सकता कि वे सुनते नहीं।

मसलन, लोग इस तरह के सवाल भला क्यों पूछना चाहते हैं-

''शादी-शुदा होने के बावजूद आप अपनी वैवाहिक स्थिति पर चुप्पी क्यों साधे रहते हैं? महिला अधिकारों की बात करने के बावजूद आप अपने वैवाहिक दायित्व की पालना क्यों नहीं करते''

''केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने एक डॉलर प्रति यूनिट लागत की गैस 2-34 डॉलर प्रति यूनिट में खरीदने का सौदा उद्योगपति मुकेश अम्बानी से किया था। इसे बढा कर 4.20 डॉलर प्रति यूनिट कर दिया जो पहली अप्रैल 2014 से 8.40 डॉलर प्रति यूनिट होने वाला था। आरोप है कि इस लूट को संभव करने के लिये जयपाल रेड्डी को हटाकर मनचाहे वीरप्पा मोइली को तेल मंत्री बनवाया गया। समझ में नहीं आता कि मोदी साहब आपने इन कीमतों को 16 डॉलर यानी दोगुणा करने के लिये केन्द्र सरकार को सिफ़ारशी खत क्यों लिखा? मोइली तो खैर अम्बानी का प्यादा माना जाता है, आपके अम्बानी से क्या सम्बन्ध हैं?

''सन् 2002 में गोधरा में गुंडों द्वारा ट्रेन यात्रियों को जलाकर मारने को आपका नाकारा प्रशासन नहीं रोक पाया था। बज़ाय इनकी ज़िम्मेदारी लेने के आपने सारे गुजरात में मुसलमानों के कत्लेआम का रास्ता चुना। प्रधानमंत्री बनने के बाद क्या आप 2002 की नीतियों जिनकी निंदा आपको ठीक नहीं लगती है, पर ही चलना पसंद करेंगे?''

''आपने राबर्ट वाड्रा के ख़िलाफ़ बोलना बन्द कर रखा है। कहीं डी एल एफ के डर से तो नहीं?''

''बतौर गुजरात के मुख्यमंत्री आपने राज्य में लोकपाल नहीं लगने दिया है। प्रधानमंत्री बनने के बाद क्या आप केन्द्र में लोकपाल लगने देंगे?''

''गुजरात में आपने अपनी पार्टी में ही अपने विरोधियों का सफ़ाया कर दिया। यही काम आप केन्द्रीय स्तर पर करने में लगे हुए हैं। प्रधानमंत्री बनने के बाद आप आडवाणी वगैरह की कितने दिनों में बोलती पूरी तरह बंद कर देंगे?''

''गुजरात में आपके शासन-काल में 800 से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं। खेती में वृद्धि-दर माइन्स में पहुंच गयी है। किसानों से ज़मीने छीन कर अम्बानी, अडानी, टाटा जैसे पूंजीपतियों को मुफ़्त में बांटी जा रही है। क्या प्रधानमंत्री बनने के बाद, विकास के नाम पर, आप इन्ही नीतियों को सारे देश में लागू करेंगे?''

''आपने गुजरात में सामान्य प्रशासन एवं पुलिस का ढांचा अपने अंगूठे तले ले लिया है। क्या यही मॉडल आप पूरे देश में लागू करना चाहेंगे?''

''अपने गृहमंत्री और पुलिस की मार्फ़त आपने एक युवती की सालों तक जासूसी कराई। इस कृत्य में तमाम नियमों व कानूनों को ताक पर रख दिया गया। जाहिर है ऐसा उस विवाहित युवती में आपकी निजी दिलचस्पी के कारण किया गया। क्या आप इस तरह की मनमानियां बतौर प्रधानमंत्री भी करते रहेंगे?''

तो यह है पूछनें वालों का हाल। अब भला मोदी जी सवाल लें भी तो कैसे? सवाल ही करने हैं तो कुछ सवाल हम सुझाये देते हैं।

-मोदी जी आप जैसे काबिल व्यक्ति को बहुत पहले देश का प्रधानमंत्री बन जाना चाहिए था। जैसे आज आपने आडवाणी को सरकाया है, पहले अटल बिहारी वाजपेयी को क्यों नहीं सरका दिया?

-मोदी लहर को तेज़ करने के लिये क्या आप कृप्या आधा दर्जन सीटों पर विभिन्न राज्यों से चुनाव लड़कर देश की जनता को कृतार्थ करेंगे?

-देश की प्राकृतिक सम्पदा (तेल, गैस, खनिज, वन आदि) के समुचित दोहन के लिये क्या आप अम्बानी परिवार के दामाद, यदियुरप्पा, श्रीरामलू जैसों को सम्बन्धित मन्त्रालयों का कार्यभार देंगे?

इत्यादि-इत्यदि। फिर देखिये मोदी साहब सुनेंगे भी और जवाब भी देंगे।

-आनंद कुमार

ख़बर दार

चोर का साथी भी चोर होता है!

सुप्रीम कोर्ट ने बदनाम अध्यक्ष श्रीनिवासन की छुट्टीकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की सट्टेबाजी में जगजाहिर लिप्तता पर ही एक तल्ख टिप्पणी की है। अब, स्वाभाविक सवाल बनता है कि श्रीनिवासन के काइयां चेहरे को वर्षों से क्रिकेट बोर्ड में बैठकर अपने समर्थन की आभा से प्रकाशमान कर रहे नरेंद्र मोदियों, शरद पंवारों, अरुण जेटलियों, राजीव शुक्लाओं, अनुराग ठाकुरों, लालू यादवों, जैसों को क्या कह कर पुकारा जाय 'चोर चोर मौसेरे भाई!

बोर्ड के उपरोक्त चौधरियों और उनके लगुओं-भगुओं की आइ पी एल (इंडियन प्रीमियर लीग) की सट्टा-लूट और ऐय्याश मुनाफाखोरी में हिस्सेदारी से क्रिकेट से जुड़ा हर छोटा-बड़ा वाकिफ होगा। पर भारत-रत्न सचिन तेंदुलकर, सफलतम क्रिकेट कप्तान महेंद्र सिंह धोनी या क्रिकेट लीजेंड सुनील गावस्कर और कपिल देव जैसे कमेंट्री-दिग्गजों ने इसे लेकर हमेशा चुप्पी ही रखी। ये सभी क्रिकेट की लोकप्रियता के चलते अरबपति बननेवाले लोग हैं और

तेंदुलकर ने हाल में ही एक और भारत-रत्न लता मंगेशकर के साथ मुम्बई के शिवसैनिक गुंडों के मुखिया राज ठाकरे को भी इज्जतदार दिखाने के प्रचार में सार्वजनिक योगदान दिया है। राज ठाकरे ने दोनों भारत-रत्नों को अपने घर चाय पर आमंत्रित किया ताकि उनकी एक दूसरे से मिलने की तमन्ना पूरी हो सके। जैसे बिना राज के घर आये वे दोनों एक दूसरे से मिल ही नहीं सकते।

इसी लिए इनकी निष्ठा क्रिकेट बेचनेवाले श्रीनिवासनों के प्रति रहती आयी है, न कि क्रिकेट देखनेवाले खेल के असंख्य भारतीय दीवानों के प्रति।

तेंदुलकर ने हाल में ही एक और भारत-रत्न लता मंगेशकर के साथ मुम्बई के शिवसैनिक गुंडों के मुखिया राज ठाकरे को भी इज्जतदार दिखाने के प्रचार में सार्वजनिक योगदान दिया है। राज ठाकरे ने दोनों भारत-रत्नों को अपने घर चाय पर आमंत्रित किया ताकि उनकी एक दूसरे से मिलने की तमन्ना पूरी हो सके। जैसे बिना राज के घर आये वे दोनों एक दूसरे से मिल ही नहीं सकते। सारा देश जानता है कि राज ठाकरे की तमाम राजनीतिक विरासत बिहारी-मलयाली व अन्य गैर-मराठी कामगारों को मुम्बई से उजाड़ने पर आधारित रही है। आनेवाले चुनावों को देखते हुए उसने समय-समय पर यह मुहिम तेज ही की है। ऐसे में यदि दो भारत-रत्न एक दूसरे से मुलाकात के एजंडे पर राज ठाकरे के घर आने की बहुप्रचारित दावत कबूलते हैं तो समाज के सम्मानित समूहों में भी राज का सिक्का जमता है। अमिताभ बच्चन जैसे महानायक यही भूमिका राज के दिवंगत चाचा बालासाहब ठाकरे, जिनकी सारी राजनीति गैर मराठियों के प्रति हिंसक घृणा पर आधारित थी, के लिए निभाया करते थे।

शेष पेज 2 पर